एवं कुची

खोतान में बौद्ध धर्म एवं संस्कृति का ऐतिहासिक अध्ययन

एस.के.जायसवाल*

भारत के सांस्कृतिक सम्बन्ध अनेक पड़ोसी देशों के साथ अत्यन्त प्राचीन काल से देखने को मिलते हैं। दक्षिणी पूर्वी एशिया के देशों के अलावा अफगानिस्तान, चीन, तिब्बत एवं मध्य एशिया आदि देशों के साथ यह सम्बन्ध प्राचीन युग में स्थापित हुए थे और दीर्घकाल तक कायम रहे जिसके फलस्वरूप बौद्ध एवं ब्राह्मण धर्म के साथ भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित अनेक अवशेष उन देशों से प्राप्त हुए हैं। पुरातात्विक उत्खनन से प्राप्त अनेक वस्तुएं भी इस पर यथेष्ट प्रकाश डालती हैं। इन देशों के साथ भारत के व्यापारिक सम्बन्धों ने भी इसमें अहम भूमिका अदा की। व्यापारिक गतिविधियों के फलस्वरूप एक लम्बे समय तक न केवल वस्तुओं का ही आदान-प्रदान हुआ, बल्कि अनेक सांस्कृतिक परम्पराओं को इन देशों के लोगों ने आत्मसात् करके धर्म एवं संस्कृति को यथार्थ रूप में स्वीकार किया। विश्व की प्राचीनतम संस्कृति के रूप मे विख्यात भारतीय संस्कृति ने इन देशों में अपनी स्पष्ट छाप छोड़ते हुए एक नया कीर्तिमान स्थापित किया था। मानव सभ्यता के प्रति भारत का सर्वोत्तम योगदान मध्य एशिया, पूर्व एशिया एवं दक्षिण पूर्व एशिया में निहित है[1]।

मध्य एशिया[2] के दक्षिण क्षेत्र में स्थित खोतान[3] प्राचीन युग में बौद्ध धर्म एवं भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था। यातायात मार्ग पर स्थित होने के कारण व्यापारिक दृष्टिकोण से इसका अपना विशेष महत्व रहा है[4]। यहाँ से प्राप्त खरोष्ठी अभिलेखों के अलावा चीनी एवं तिब्बती स्रोतों एवं समय-समय पर आरेल स्टाइन[5] जैसे पुराविद द्वारा इस क्षेत्र में सम्पन्न उत्खननों से पता चलता है कि यह स्थल बौद्ध धर्म का प्रसिद्ध केन्द्र था और इस धर्म का यहाँ व्यापक प्रचार-प्रसार था। एक बौद्ध अनुश्रुति के अनुसार खोतान में बुद्ध के समय से ही बौद्ध धर्म अपना लिया गया था।

Scanned with CamScanner

एक प्राचीन खोतानी परम्परा के अनुसार अशोक के पुत्र कुस्तन (कुणाल) ने बुद्ध के निर्वाण के 234 वर्ष बाद अर्थात 240 ई0 पू0 में बारह वर्ष की उम्र में खोतान जाकर सोलह वर्ष की अवस्था में अपना राज्य स्थापित किया था। एक अन्य परम्परा के अनुसार, तिष्यरक्षिता के षड्यंत्र के कारण जब कुणाल अन्धे कर दिए गए, तो तक्षशिला के निवासी तथा कुणाल के समर्थक दुखी होकर तक्षशिला छोड़कर कुणाल के साथ खोतान गऐ एवं वहाँ उसे राजगद्दी पर बैठाया। कुणाल के पौत्र विजयसंभव ने भारतीय बौद्धाचार्य आर्य वैरोचन की शिष्यता ग्रहण करके खोतान में बौद्ध धर्म का सूत्रपात किया था। विजयसंभव ने ही यहाँ सर्वप्रथम **त्सर-म** के विस्तृत विहार का निर्माण वैरोचन के लिए करवाया था। इसकी निर्माण तिथि 211 ई0 पू0 मानी जाती है। चीनी स्रोतों से पता चलता है कि इस विहार के साथ-साथ एक स्तूप का भी निर्माण हुआ था जो 'उल्टे कटोरे' के नाम से प्रसिद्ध था[6]। एक चीनी भिक्षु सोग-युंग ने इस विहार का नाम **त्सन-मो** (Tsan-mo) दिया है। आरेल स्टाइन ने इस विहार स्थान की पहचान योतकन के पास यलमा कजान नामक स्थान से की है। आगे आने वाले समय में खोतान के शासक विजयसिंह की पत्नी पुनेश्वर, जो चीन की राजकुमारी थी, ने भारत से आए हुए कल्याणमित्र और संघघोष के लिए दो विहारों का निर्माण कराकर बौद्ध धर्म के प्रति अपनी श्रृद्धा प्रकट की। इन विहारों के नाम **पोतर्य** और **मज** थे। विजयसिंह का ज्येष्ठ पुत्र धर्मानन्द भी बौद्ध धर्म के प्रति इतना आकर्षित हो गया था कि उसने भिक्षुव्रत धारण करके बौद्ध धर्म के महासांघिक मत को स्वीकार कर लिया और बुद्ध की जन्म भूमि भारत आकर इस धर्म के प्रति अपार श्रद्धा प्रकट की। उसने भी अनेक विहारों का निर्माण कराने में विशेष रूचि ली। इस प्रकार **त्सर-म** विहार के निर्माण के बाद खोतान में विहारों के निर्माण का सिलसिला बराबर जारी रहा और बौद्ध काल के अन्त तक इनकी संख्या 68 हो गयी थी। इसके अलावा भी 95 विहार मध्य वर्ग के 148 छोटे विहार भी निर्मित हुए थे।[7] इस तरह खोतान निश्चित रूप से बौद्ध धर्म का एक प्रसिद्ध केन्द्र बन गया था।[8]

Scanned with CamScanner

सौभाग्य से खोतान में बौद्ध धर्म एवं संस्कृति के सन्दर्भ में फाहियान नामक चीनी यात्री का विवरण काफी महत्वपूर्ण है जिसने पांचवी सदी के प्रारम्भ में मध्य एशिया के मार्ग से भारत की यात्रा की थी। उसने खोतान के विषय में लिखा है कि ''यह देश अत्यन्त समृद्ध है और यहाँ के लोग काफी धनी हैं और सब बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं। श्रमण और भिक्षु बड़ी संख्या में हैं और सब महायान सम्प्रदाय के अनुयायी हैं। सबके भोजन की व्यवस्था जनता द्वारा की जाती है। विदेशों से आने वाले श्रमणों और भिक्षुओं के आतिथ्य का समुचित प्रबन्ध है। इन सबकी आवश्यकतायें यहाँ भली-भाँति पूरी की जाती हैं।'' फाहियान के समय भिक्षुओं की संख्या लाखों तक पहुँच गयी थी, जो अनुशासन सम्बन्धी नियमों का कठोरतापूर्वक पालन करते थे और जिनमें औचित्य और शालीनता की उच्च भावना विद्यमान थी। यहाँ हर घर के सामने एक छोटा स्तूप था। फाहियान के अनुसार छोटे से छोटे स्तूप की ऊंचाई बीस हाथ होती थी।''

फाहियान ने बौद्ध धर्म और संस्कृति के प्रमुख केन्द्र गोमती विहार का वर्णन करते हुए लिखा है कि यह महायान सम्प्रदाय का संघाराम था जिसमें तीन हजार भिक्षु निवास करते थे। यहाँ के भिक्षु एक रथ यात्रा निकालते थे। यह रथ 30 फीट ऊंचा होता था और तोरणों आदि से अच्छी तरह से सजाया जाता था। रथ के ठीक बीच में भगवान बुद्ध की मूर्ति स्थापित की जाती थी। इस अवसर पर राजा भी राजकीय वेश उतारकर उपासकों के वस्त्र धारण करके नंगे पैर चलकर अपने पार्श्वचरों के साथ रथ के स्वागत के लिए आगे बढ़ता था और मूर्ति की पूजा-अर्चना करता था। खोतान में चौदह बड़े संघाराम थे और प्रत्येक संघाराम से इसी प्रकार की रथ यात्रा निकाली जाती थी।'' फाहियान ने खोतान के अन्य विहार का विवरण देते हुए लिखा है ''राजा का नया विहार, जिसके निर्माण में आठ बरस लगे थे, 250 हाथ ऊंचा है, इसमें नक्काशी और जड़ाऊ काम बहुत सुन्दर है। ऊपर से यह सोने और चाँदी से मढ़ा है। बुद्ध का कक्ष बहुत शानदार और सुन्दर है, स्तम्भ, झिलमिलीदार दरवाजे और खिड़कियां सभी सोने से मढ़े गए हैं। भिक्षुओं के कक्षों की सजावट इतनी सुन्दर और शानदार है कि उसे

Scanned with CamScanner

शब्दों में नहीं बयान किया जा सकता है।"[12] फाहियान ने इस बात पर भी प्रकाश डाला है कि तुर्किस्तान के छह राजाओं ने अपनी समस्त मूल्यवान वस्तुओं को इस विहार को दान में दे दिया था और केवल कुछ ही चीजें अपने उपयोग के लिए रखी थीं।[13] बुद्ध और बौद्ध धर्म के प्रति इससे ज्यादा आकर्षण बहुत ही कम देखने को मिलता है। निश्चित रूप से खोतान बौद्ध धर्म और संस्कृति का ऐसा केन्द्र बन गया था कि विदेशी यात्री भी उससे प्रभावित हुए बिना न रह सके।

सुंगयुन नामक एक चीनी यात्री बौद्ध धर्म के ग्रन्थों का अध्ययन करने हेतु चीन से मध्य एशिया होता हुआ भारत आया था। उसने भी खोतान के सन्दर्भ में यह तथ्य प्रस्तुत किया है कि वह बौद्ध धर्म का प्रसिद्ध केन्द्र था। यहाँ बौद्ध धर्म के प्रसार का श्रेय वैरोचन नामक एक भिक्षु को था जिसने अपने चमत्कारिक लक्षणों से वहाँ के राजा को प्रभावित करने में सफलता प्राप्त की और वह बौद्ध धर्म का अनुयायी हो गया।[14] इस तरह छठी शताब्दी ईसवी में सुंगयुन का विवरण खोतान में बौद्ध धर्म और संस्कृति के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण सूचना देता है।

सातवीं शताब्दी ईसवी के चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार भी खोतान के निवासी बौद्ध धर्म के अनुयायी थे और वे न केवल समृद्ध बल्कि सुसंस्कृत भी थे। इस चीनी यात्री के अनुसार वहाँ सौ से अधिक संघाराम थे जिसमें 5000 से भी ज्यादा भिक्षु निवास करते थे और सभी भिक्षु महायान सम्प्रदाय के अनुयायी थे। एक अन्य महत्वपूर्ण बात यह थी कि खोतानी भाषा की वाक्य रचना भी भारतीय ढंग की ही थी। खोतान से चार मील दूर दक्षिण-पश्चिम में गोशृंग विहार का उल्लेख भी चीनी यात्री ने किया है। यहाँ बुद्ध की एक ऐसी मूर्ति थी जिसमें प्रकाश की किरणें निकलती रहती थीं। वर्तमान समय में भी इसके अवशेष प्राप्त हैं और इसे कोहमारी कहा जाता है। यहां अब भी एक गुहा विद्यमान है जिसमें दो मंजिले हैं। इस प्रकार खोतान से दो मील दक्षिण पश्चिम में एक अन्य संघाराम के सन्दर्भ में चीनी यात्री का कथन है कि इसमें बुद्ध की जो मूर्ति है, वह कूची से लायी गयी थी। इस संघाराम को दीर्घभवन संघाराम के नाम से जाना जाता था।[15] इस

Scanned with CamScanner

प्रकार ह्वेनसांग ने भी फाहियान की तरह खोतान में उन्नतिशील बौद्ध धर्म का प्रशंसात्मक स्वर से उल्लेख प्रस्तुत किया है।[16]

एक सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में खोतान का महत्व इतना ज्यादा था कि दूर-दूर से जिज्ञासु बौद्ध धर्म का अध्ययन करने के लिए यहाँ आते थे। तीसरी शताब्दी ईसवी में चू-शे-हिंग नाम का एक चीनी भिक्षु यहाँ आया था जिसने मूल बौद्ध ग्रन्थों को एकत्रित करके वहाँ की शासक की आज्ञा से चीन भेज दिया जहाँ कुछ का अनुवाद मोक्षल नामक एक खोतानी बौद्ध विद्वान द्वारा किया गया। पाँचवी शताब्दी में एक अन्य विद्वान लिआंग-चाऊ जो मगध का निवासी था और भारत से महापरिनिर्वाण सूत्र की पाण्डुलिपि ले आकर खोतान में इसका अनुवाद सात वर्षों में पूरा किया था। इसी तरह चिंग-शेंग नामक एक विद्वान खोतान की प्रशंसा सुनकर वहां अध्ययन हेतु गया था और बाद में चीन लौटकर खोतान से लाए हुए ग्रन्थों का चीनी भाषा में अनुवाद किया था। चीन से खोतान आने वाला एक भिक्षु फलिन भी था। आगे आने वाले समय में भी अनेक भिक्षुओं और विद्वानों का खोतान जाने और बौद्ध धर्म से सम्बन्धित ग्रन्थों का अध्ययन करने का सिलसिला जारी रहा और खोतान अपनी सांस्कृतिक मान्यताओं को कायम करने में सफल रहा।[17] भारतीय संस्कृति का प्रभाव इसी कारण मध्य एशिया से होकर चीन में फैला था।[18]

खोतान की कला पर भी भारतीय प्रभाव परिलक्षित होता है। बौद्ध धर्म से सम्बन्धित बुद्ध, बोधिसत्व और जातक कथाओं को चित्रित किया गया। खोतान क्षेत्र में रवाक नामक स्थान से बुद्ध, बोधिसत्व और अर्हतों की मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। शिव और गणेश के चित्रों से यह भी निष्कर्ष निकाला जाता है कि ब्राहम्ण धर्म से सम्बन्धित संस्कृति ने भी वहाँ अपना स्थान बना लिया था। इसके अलावा द्वारपालों की भी मूर्तियाँ बनायी जाती थीं।[19] ऐसा माना जाता है कि खोतान की कला गन्धार कला से काफी प्रभावित थी।

खोतान से पूर्व की ओर दन्दान-उलिक से भी अनेक बौद्ध चैत्यों, संघारामों और सर्वसाधारण लोगों के निवास-गृहों के अवशेष प्राप्त हुए

Scanned with CamScanner

है। विहार-गुहों की दीवारें विविध प्रकार के चित्रों और आकृतियों द्वारा अलंकृत हैं। यहाँ से रेत में दबे हुए प्राचीन ग्रन्थों के जो पृष्ठ मिले हैं उनकी भाषा संस्कृत है और लिपि गुप्तकालीन ब्राह्मी है। इस प्रकार बुद्ध और बौद्ध धर्म के साथ भारतीय संस्कृति की जो महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ खोतान से प्राप्त हुई हैं और जिसके कारण खोतान की स्थिति काफी महत्वपूर्ण हो जाती है, उसको इस प्रकार प्रकट किया जा सकता है-

1. मध्य एशिया के भारतीय उपनिवेशों में खोतान सर्वप्रथम था। यह अपने वैभव के लिए काफी विख्यात था। यहाँ पर उत्खनन के फलस्वरूप जो वस्तुएं मिली हैं उनसे बौद्ध धर्म और भारतीय संस्कृति की सत्ता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। खुदाई में अनेक ऐसे प्रस्तर फलक मिले हैं। बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित घटनाएं उत्कीर्ण की गयी हैं। यहाँ से प्राप्त स्तूपों, संघारामों और चैत्यों से यह निष्कर्ष निकालना स्वाभाविक है कि यहाँ बौद्ध धर्म अपने पूर्ण विकास पर था और शासकों का झुकाव भी इस धर्म के प्रति विशेष रूप से था।

2. यहाँ से प्राप्त अनेक सिक्कों पर खरोष्ठी लिपि में लिखे गए प्राकृत भाषा के जो लेख हैं उनसे भी भारतीय संस्कृति की जानकारी मिलती है। अर्क-कुदुक के खेड़े से अनेक सिक्कों के मिलने की जो जानकारी प्राप्त होती है उनमें 20 ऐसे हैं जिनके एक ओर खरोष्ठी लिपि तथा प्राकृत भाषा के लेख हैं। यहाँ की खुदाई में प्राप्त कुषाणवंशी शासकों के सिक्कों में सबसे ज्यादा कनिष्क के सिक्के हैं। कुषाण शासक खोतान को अपने साम्राज्य के अन्तर्गत करने में सफल हुए थे और इसी कारण यहां की कला भी गन्धार और यूनानी कला से काफी प्रभावित दिखती है। चौथी शती ईसवी में खोतान में खरोष्ठी के स्थान पर ब्राह्मी का प्रयोग होने लगा जो उस समय के गुप्तकालीन भारत से ली गयी थी।

Scanned with CamScanner

3. बौद्ध धर्म और भारतीय संस्कृति के पथप्रदर्शक खोतान की स्थिति इतनी महत्वपूर्ण थी कि अनेक बौद्ध प्रचारक खोतान से धर्म प्रचार के प्रयोजन से चीन गए और चीन से बौद्ध भिक्षु भी धर्म एवं दर्शन का उच्च ज्ञान प्राप्त करने खोतान आए। अनेक बौद्ध ग्रन्थों का इसीलिए चीनी भाषा में अनुवाद हुआ। इस तरह भारतीय संस्कृति खोतान से चीन गयी और अपनी सत्ता कायम करने में सफल रही।

4. खोतान अपने चरमोत्कर्ष काल में पूर्व में वर्तमान चीन तक विस्तृत था। यहाँ से लकड़ी की तख्तियों पर खरोष्ठी लिपि में लिखे अनेक लेखों में अनेक भारतीय नामों-भीम, अर्जुन, वंगुसेन, नन्दसेन आदि का जो उल्लेख मिलता है उससे भी भारतीय संस्कृति का आभास होता है। खोतान के निवासियों की वेश-भूषा पर भी भारतीय प्रभाव स्पष्ट प्रतीत होता था। खरोष्ठी लेखों में दैनिक जीवन से सम्बन्धित ऊन, रेशम, कपास, रूई एवं चमड़े के बने वस्त्रों के जो उल्लेख हैं, वे भारतीय वेश-भूषा के काफी निकट हैं।

5. खोतान के निवासियों पर भारतीय संगीत और नाटक का काफी प्रभाव था। भारतीय रथ यात्रा की तरह वे भी प्रतिवर्ष मूर्तियों का जुलूस निकालते थे। चीनी स्रोतों से सूचना मिलती है कि यह राज्य गायन तथा नृत्य के लिए काफी प्रसिद्ध था। शास्त्रीय परम्परा के रागों का जो स्थानीय नामकरण हुआ वह संस्कृत नामों स मेल खाता है।

6. एक खरोष्ठी लेख में खोतानी शासक महाराजा राजातिराज देव विजित सिंह का जो उल्लेख मिलता है, उससे स्पष्ट होता है कि शासक गण भारतीय उपाधियाँ भी धारण करने के शौकीन थे। निश्चित रूप से वहाँ की शासन-व्यवस्था पर भी भारतीय प्रभाव था। 'चर', 'दूत' आदि जो शब्द लेखों में प्राप्त हुए हैं, वे भी भारतीय ही हैं और स्पष्ट संकेत देते हैं कि प्रशासन में उनका प्रयोग होता था।

Scanned with CamScanner

इस तरह बौद्ध धर्म और भारतीय संस्कृति के विविध आयामों के आधार पर यह निष्कर्ष निकालना स्वाभाविक है कि कूची में भारतीय संस्कृति पूरी तरह रच बसी थी और यहाँ के लोग इस संस्कृति से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने जीवन के हर क्षेत्र में इसको अपनाने का हर सम्भव प्रयास किया जिसमें वे एक निश्चित सीमा तक सफल भी हुए। उत्खनन से प्राप्त स्तूप, विहार, सिक्के, पाण्डुलिपियाँ, मूर्तियाँ आदि इसके स्पष्ट प्रमाण हैं।

कुची– कारासहर के पश्चिम में स्थित कुची प्राचीन काल में एक अत्यन्त समृद्ध तथा शक्तिशाली राज्य था जिसकी राजधानी का नाम भी कुची था। प्रसिद्ध फ्रेंच विद्वान सिल्वां लेवी ने कुची के प्राचीन अभिलेखों की भाषा का अनुशीलन करके यह निष्कर्ष निकाला है कि कुची के प्राचीन निवासी विशाल आर्य जाति की ही अन्यतम शाखा थे। वराहमिहिर की बृहत्संहिता में शक, पल्लव, चूलिक और चीन आदि के साथ **'कुचिक'** का जो उल्लेख हुआ है, उससे सम्भवतः कुची का ही संकेत मिलता है। कुची प्राचीन काल में बौद्ध धर्म का एक प्रसिद्ध केन्द्र था जहां अनेक ऐसे संघाराम विद्यमान थे जिसमें हजारों भिक्षु निवास करते थे और जिनके आचार्य और अर्हत् अपने ज्ञान के लिए दूर-दूर तक चर्चित[19] थे। चीन में भी बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में कुची के बौद्ध प्रचारकों का प्रमुख योगदान था। इसी कारण प्राचीन चीनी ग्रन्थों में कुची के बौद्ध विहारों के संबंध में अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएं प्राप्त होती है।

कुची में बौद्ध धर्म का प्रचार पहली या दूसरी सदी ई०पू० में प्रारम्भ हो चुका था। तीसरी शती ईसवी के चीनी विवरणों से ज्ञात होता है कि कुची में लगभग एक हजार स्तूप और मन्दिर थे। बौद्ध भिक्षु कुची से चीन गए और बौद्ध ग्रन्थों के चीनी अनुवाद में महत्वपूर्ण भाग लिया। पो-येन नाम बौद्ध भिक्षु सम्भवतः कुची के राजघराने का था। उसने 6 बौद्ध पुस्तकें चीनी भाषा में लिखी थी। चौथी शताब्दी तक बौद्ध धर्म सम्बन्धी गतिविधियां अपनी परमोत्कर्ष पर थी और कुची पूर्ण रूप से बौद्ध नगर बन चुका था। एक चीनी ग्रन्थ से ज्ञात होता है कि इस समय कुची में बहुत से चैत्य तथा विहार विद्यमान थे, जिनमें

Scanned with CamScanner

चार विहार प्रमुख थे। ता-मु विहार में 170 भिक्षु निवास करते थे और पो-शान पर्वत पर निर्मित चे-ह-ली विहारों में 80 और 60 भिक्षुओं का निवास स्थान था। इसके अतिरिक्त एक अन्य नए विहार का निर्माण कुची के राजा ने कराया था। इन विहारों की व्यवस्था का पूरा प्रबन्ध बुद्धस्वामी नामक बौद्ध विद्वान् करता था। इन विहारों में विनयपिटक द्वारा प्रतिपादित अनुशासन सम्बन्धी नियमों का कठोरता के साथ पालन किया जाता था। कोई भिक्षु एक स्थान पर तीन मास से अधिक समय तक नहीं रह सकता था। चीनी ग्रन्थों से यह भी सूचना मिलती है कि बुद्ध स्वामी के अधीन तीन ऐसे विहार भी थे, जहां भिक्षुणियाँ निवास करती थी। इनमें आरुणक विहार में 180 भिक्षुणियाँ, लिउन-जो-कान विहार में 50 भिक्षुणियाँ और अ-ली-पो विहार में 30 भिक्षुणियाँ निवास करती थी। इन समस्त भिक्षुणियों का सम्बन्ध कुची में राजपरिवार एवं अन्य सम्भ्रान्त परिवारों से था। इनमें बुद्ध के प्रति अपार श्रद्धा थी और इसी कारण उन्होंने भिक्षुणी व्रत ग्रहण किया था। आचार्य बुद्ध स्वामी ने 500 ऐसे नियम बनाए थे जिनका पालन करना उनके लिए अनिवार्य था।

छठी सदी के अन्त में धर्मगुप्त नामक भारतीय आचार्य कुची गया था। वह वहां के राजकीय नव विहार में दो वर्ष तक रहा था और बाद में चीन चला गया। 630 ई० में ह्वेनसांग कुची गया था जहां उसने बौद्ध धर्म को काफी फलता-फूलता पाया था। उसके अनुसार उस समय वहां 100 संघाराम थे जिनमें 5000 के लगभग भिक्षु निवास करते थे। यह सब हीनयान मत के अनुयायी थे तथा मूल संस्कृत ग्रन्थों का अध्ययन करते थे। नगर से 40 ली उत्तर की ओर पर्वतों के ढाल में दो विहार थे जिन्हें चाऊ-हू-ली कहा जाता था। वहां बुद्ध की एक बहुत सुन्दर मूर्ति थी। नगर के पश्चिमी द्वार के आगे बुद्ध जी की खड़ी हुई दशा में 90 फीट ऊंची दो मूर्तियाँ थीं। एक अन्य प्रसिद्ध विहार अ-शे-ली-नी था जहां अनेक देशों से बौद्ध भिक्षु आकर एकत्रित होते थे। चीनी यात्री ने कुची में वार्षिक बौद्ध संगीति का भी उल्लेख किया है जिसमें बुद्ध जी की मूर्तियों को बाहर जुलूस

Scanned with CamScanner

के साथ निकाला जाता था। यहां के शासकों और जनता में बौद्ध धर्म के प्रति विशेष आस्था थी।

आठवीं सदी में भी कुची में बौद्ध धर्म की मान्यता थी और यहां बौद्ध धर्म का विकास अपनी उन्नतावस्था में था। **वू-कौंग** नामक चीनी विद्वान भारत से लौटता हुआ कुची गया था और वहां के उत्पल विहार में रुका था। उस समय वहां एक बहुत ही प्रसिद्ध विद्वान निवास करते थे जिनका नाम उत्पलवर्षित था। **वू-कौंग** की प्रेरणा से उन्होंने दशबल सूत्र का चीनी भाषा में अनुवाद किया। जब तुर्कों द्वारा कुची पर अधिकार स्थापित कर लिया गया वहां शासन सम्बन्धी समस्त शक्तियां तुर्कों के हाथों पर आ गयी, तब भी वहां बौद्ध धर्म अपनी स्थिति को बनाए रखने में सफल रहा और इसमें कोई भी अन्तर नहीं आया। तुर्कों ने इस धर्म को अपना लिया और इस तरह कुची में बौद्ध धर्म अपने पहले जैसी स्थिति में रहा। इस तरह मध्य एशिया में खोतान की ही भांति कुची भी बौद्ध धर्म का प्रमुख स्थल रहा जहां बौद्ध धर्म का प्रचार तीव्र गति से हुआ था और इसमें वहां के अनेक विद्वानों की भूमिका भी काफी सराहनीय थी।[21] यहां की संस्कृति पर भी खोतान की तरह भारतीय संस्कृति का पूरा प्रभाव देखने को मिलता है।[22]

सन्दर्भ एवं टिप्पणियाँ

1. दामोदर सिंहल, **एशिया में बौद्ध धर्म**, मीनाक्षी प्रकाशन, पृ०।

2. चीन के पश्चिम, ईरान तथा अफगानिस्तान के उत्तर पूर्व, तिब्बत के उत्तर और एशियाई रूस के दक्षिण में विशाल भूखण्ड को ही मध्य एशिया कहा जाता है। यहां के निवासी प्रायः तुर्क जातियों के होने के कारण इसे तुर्किस्तान भी कहा जाता है।

3. खोतान का प्राचीन नाम यु-तुन (yu-tun) प्राप्त होता है। खरोष्ठी अभिलेखों में इसका नाम कुस्तन, खोतन, खोदन और खोदम्न प्राप्त होता है। बौद्ध साहित्य में इसका नाम गोदान

Scanned with CamScanner

एवं तिब्बती स्रोतों में इसको ली-युल एवं इसकी राजधानी के यू-थेन (U-then) कहा गया है।

4. यह व्यापारिक मार्ग रेशम मार्ग के नाम से भी जाना जाता था। चीन के रेशम व्यापारियों के लिए यह मार्ग काफी महत्वपूर्ण था। इससे होकर ही वे पश्चिम की ओर रोम तक जाते थे। **पेरिप्लस ऑफ् द एरीथ्रियन सी** नामक ग्रन्थ में भारत और पश्चिमी जगत के मध्य व्यापार का उल्लेख मिलता है। व्यापार हेतु रेशम स्थल मार्ग से भारतीय बन्दरगाहों तक आता था और यहाँ से समुद्री मार्ग द्वारा विदेशों को भेजा जाता था। टॉलमी ने भी अपने ग्रन्थ **जाग्रफी** में भारतीय समुद्रतट के अनेक बन्दरगाहों का वर्णन किया है। द्रष्टव्य डब्लू0एच0 स्काफ् द **पेरिप्लस ऑफ द एरीथ्रियन सी,** मोती लाल बनारसी दास, 1974, जॉन डब्लू. मैकक्रिण्डल **ऐंशियन्ट इण्डिया ऐज डिस्काइब्ड बाई टॉलमी,** नई दिल्ली 2000.

5. दृष्टव्य आरेल स्टाइन, **रियून्स ऑफ डिजर्ट कैथी,** लन्दन 1912, पृ0 431-439, स्टाइन ने खोतान के सन्दर्भ में विशेष प्रकाश **ऐंशियन्ट खोतान** (दो भागों में) प्रस्तुत किया है। स्टीन ने वाल्यूम-III में खोतान से सम्बन्धित स्तूपों, विहारों का चित्रांकन भी किया है।

6. दृष्टव्य दामोदर सिंहल, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ0-10

7. दृष्टव्य बैजनाथ पुरी, **मध्य एशिया में भारतीय संस्कृति,** लखनऊ, 1981, पृ0-50

8. दृष्टव्य राम प्रसाद त्रिपाठी, **विश्व इतिहास,** लखनऊ, 1988, पृ0-388

9. दृष्टव्य सत्यकेतु विद्यालंकार, **मध्य एशिया तथा चीन में भारतीय संस्कृति,** मसूरी, 1980, पृ0-129

10. दृष्टव्य आर.सी. मजुमदार, **श्रेण्य युग,** मोतीलाल बनारसी दास, 1984, पृ0-694, स्टाइन के अनुसार फाहियान के समय

Scanned with CamScanner

खोतान में हीनयान की मान्यता थी। दृष्टव्य ऐंशियन्ट खोतान, पृ0-56

11. सत्यकेतु विद्यालंकार, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ0-129-130

12. आर.सी. मजुमदार, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ0-695

13. वही

14. सत्यकेतु विद्यालंकार, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ0-131

15. वही, पृ0-134-135

16. आर.सी. मजुमदार, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ0-694

17. बैजनाथ पुरी, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ0-57-59

18. ए.एल. बाशम, अद्भुत भारत, संशोधित हिन्दी संस्करण, आगरा, पृ0-356

19. दृष्टव्य पी.एन. चोपड़ा, बी.एन.पुरी., एम.एन.दास, ए सोशल, कल्चरल एण्ड इकनामिक हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, वाल्यूम-I, मद्रास, 1990, पृ0-289

20. दृष्टव्य आर.सी. मजुमदार, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ0-696, आर.एस. शर्मा, प्रारम्भिक भारत का परिचय, नई दिल्ली 2004, पृ0-286

21. ह्वेनसांग के अनुसार कुचि के निवासी वीणा और बांसुरी वादन में काफी निपुण थे। वहां के निवासियों में संगीत दक्षता का कारण भारतीय प्रभाव था। वहाँ न केवल भारतीय संगीत प्रणाली का ही प्रवेश हुआ, बल्कि भारतीय संगीतकार भी वहाँ गये थे और उनमें से कुछ वहीं बस भी गये थे। दृष्टव्य आर.सी.मजुमदार, पूर्वनिर्दिष्ट, पृ0-696

22. खरोष्ठी लेखों के आधार पर यह निष्कर्ष निकालना स्वाभाविक है कि वहाँ के सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक जीवन पर

Scanned with CamScanner

भारतीय संस्कृति की अमिट छाप थी। वहाँ की शासन-व्यवस्था पर भी भारतीय प्रभाव स्पष्ट रूप से था। द्रष्टव्य उषा वर्मा, मध्य एशिया के खरोष्ठी लेखों में जीवन, समाज और धर्म, वाराणसी, 1959

Scanned with CamScanner